लाल किताब टेवा

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

PAWAN KUMAR VERMA

ASTRO RESEARCH CENTER

Contact - 9417311379

© RED ASTRO 11 Professional

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 दिसम्बर 1973
जन्म समय	01:45:00
जन्म दिन	मंगलवार
जन्म स्थान	Ballia (up)
राज्य	
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	01:51:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	07:36:55 hrs
इष्ट काल	47: 52: 16 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
ऋतु	हेमन्त
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
वार	सोमवार
तिथि	नवमी
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)
योग	सौभाग्य
करन	गरिज

अवकहड़ा चक्र

पाया	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
वश्य	द्विपद
योनि	महिष (स्त्री)
गण	देव
नाड़ी	आदि
रज्जु	कंठ
तत्व	अग्नि
तत्वाधिपति	मंगल
विहग	वायस
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	श
दशा बैलेंस	चन्द्रमा – 5व05मा026दि0
वर्तमान दशा	शनि–शनि–राहु
भयात	27: 30: 35 Ghati
भभोग	61: 31: 25 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	धनु
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:29:36
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	06:36:32AM
सूर्यास्त	05:03:05PM
जन्मदिन का ग्रह	चन्द्रमा
जन्मसमय का ग्रह	शनि

लग्न

कन्या

राशि

कन्या

नक्षत्र – पद

हस्ता – 2

लग्नाधिपति

बुध

राशिपति

बुध

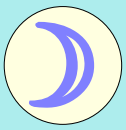

नक्षत्रपति

चन्द्रमा

घात चक्र

भद्रा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मिथुन अशुभ राशि	मीन अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
श्रावण अशुभ नक्षत्र	सुकर्मन अशुभ योग	कौलव अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार शुभ दिन
बुध, शुक्र शुभ ग्रह	मंगल, गुरू अशुभ ग्रह	धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र राशि
धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
हीरा भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूरस शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	धनु 02:15:49 मूला (1) सम राशि	चन्द्रमा कन्या 16:00:57 हस्ता (2) मित्र राशि
मंगल	मेष 04:42:18 अश्विनी (2) स्व नक्षत्र	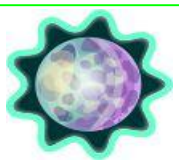 बुध (अ.) वृश्चिक 19:51:24 ज्येष्ठा (1) स्व राशि
गुरू	मकर 17:56:39 श्रवण (3) स्व नक्षत्र	शुक्र मकर 13:00:16 श्रवण (1) नीच राशि
शनि (व.)	मिथुन 08:12:33 अरिद्रा (1) मित्र राशि	राहु धनु 05:10:35 मूला (2) मित्र राशि
केतु	मिथुन 05:10:35 मृगशिर (4) सम राशि	हर्षल तुला 03:20:59 चित्रा (4) सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक 14:20:41 अनुराधा (4) सम राशि	प्लूटो कन्या 13:11:14 हस्ता (1) सम राशि
लग्न	कन्या 28:15:29 चित्रा (2) ---	10वां कस्प मिथुन 28:56:27 पुनर्वसु (3) ---

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह		व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♍ कन्या	28:15:29	चित्रा (14)	2		
☽	सूर्य		♐ धनु	02:15:49	मूला (19)	1	दारा	मित्र राशि
☉	चन्द्रमा		♍ कन्या	16:00:57	हस्ता (13)	2	भ्रात्रि	स्व नक्षत्र
☽	मंगल		♈ मेष	04:42:18	अश्विनी (1)	2	ज्ञाति	स्व राशि
☿	बुध	अ.	♏ वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (18)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♃	गुरू		♑ मकर	17:56:39	श्रवण (22)	3	अमात्य	नीच राशि
♀	शुक्र		♑ मकर	13:00:16	श्रवण (22)	1	मात्रि	मित्र राशि
♄	शनि	व.	♊ मिथुन	08:12:33	अरिद्रा (6)	1	अपत्या	मित्र राशि
☊	राहु		♐ धनु	05:10:35	मूला (19)	2		सम राशि
☋	केतु		♊ मिथुन	05:10:35	मृगशिर (5)	4		सम राशि
♅	हर्षल		♎ तुला	03:20:59	चित्रा (14)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♏ वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (17)	4		सम राशि
♇	प्लूटो		♍ कन्या	13:11:14	हस्ता (13)	1		सम राशि

लग्न कुण्डली

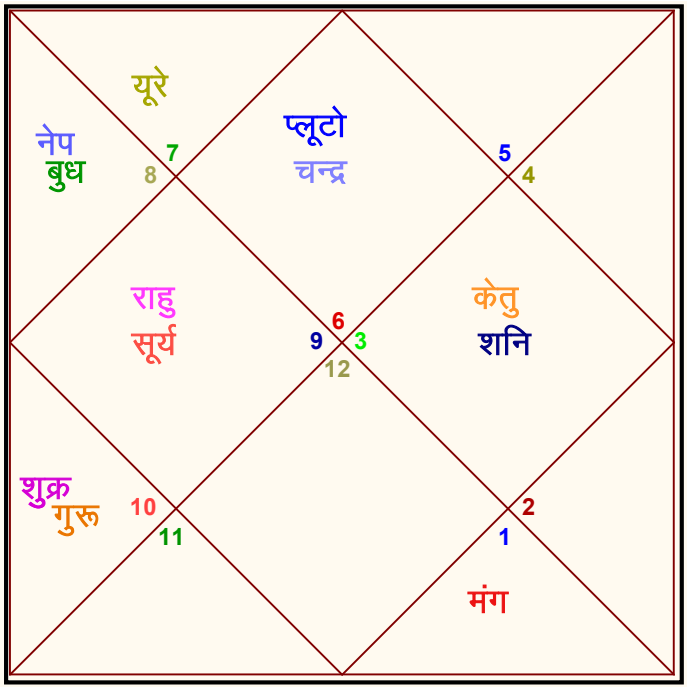

नवांश कुण्डली

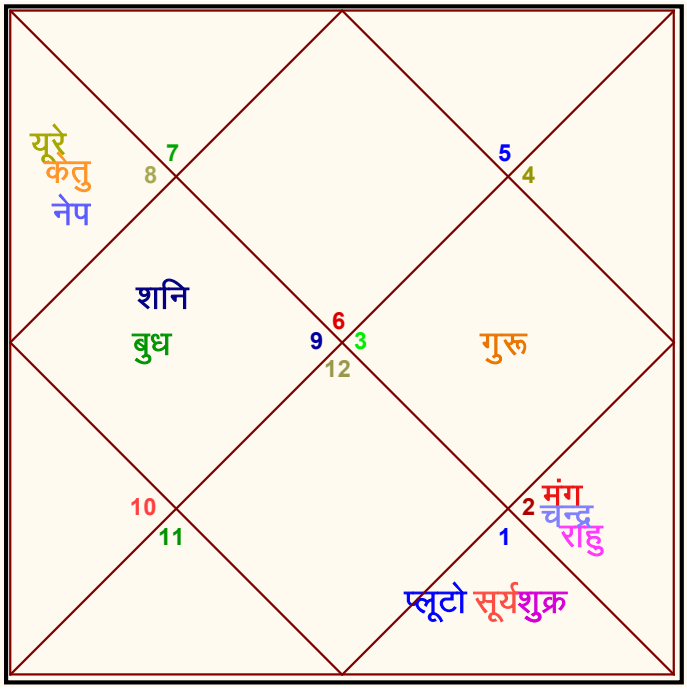

लाल किताब में ग्रह

सूर्य

भाव न. 4, स्वयं का ऋण, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (चन्द्रमा,गुरू), बिलमुकाबिल (चन्द्रमा, गुरू)

चन्द्रमा

भाव न. 1, जन्मदिन का, शुभ भाव में, साथी (सूर्य)

मंगल

भाव न. 8, ग्रहफल, पक्के घर का, अपने घर का, अशुभ भाव में

बुध

भाव न. 3, स्वभाव (राहु), किस्मत का, अपने घर का, भाग्योदय का, अशुभ भाव में, साथी (सूर्य,राहु)

गुरू

भाव न. 5, ग्रहफल, पक्के घर का, पितृ ऋण, मित्र के घर में, शुभ भाव में

शुक्र

भाव न. 5, शत्रु के घर में, अशुभ भाव में

शनि

भाव न. 10, बद स्वभाव, ग्रहफल, पक्के घर का, अपने घर का, जन्मसमय का, भाग्योदय का, शुभ भाव में, बिलमुकाबिल (राहु)

राहु

भाव न. 4, धर्मी, अशुभ भाव में

केतु

भाव न. 10, राशिफल, शुभ भाव में

ग्रह स्थिति (लाल किताब)

लाल किताब टेवा

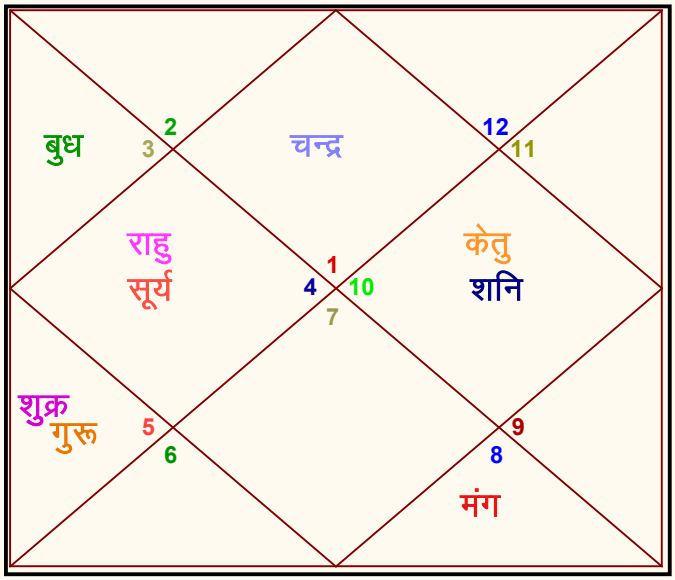

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

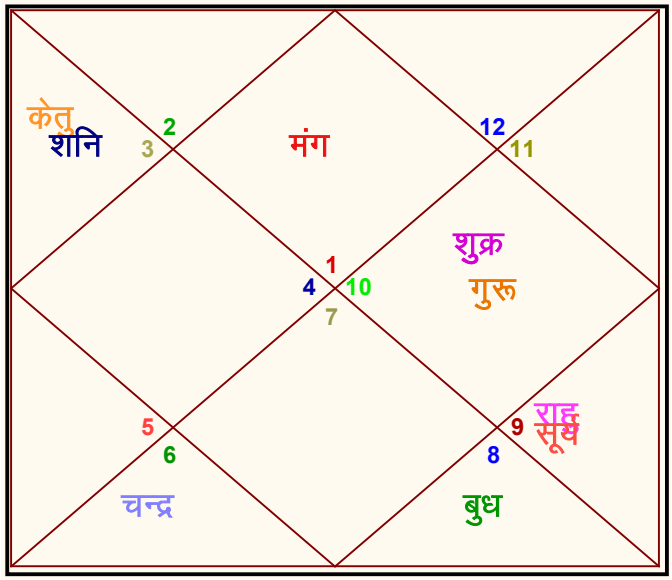

ग्रह योग

सूर्य + गुरू	(साझी दिवार), चन्द्रमा, वाल्दैनी खुन (वीर्य)
सूर्य + शनि	(दृष्टि–100), मंगल (बद), औलाद जिंदा रखने का मालिक
सूर्य + शनि	(दृष्टि–100), राहु (नीच), औलाद जिंदा रखने का मालिक
गुरू + शुक्र	(युति), शनि (केतु), सेहत/बीमारी

ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य	शनि(100), केतु(100)	मंग.			चन्द्र	गुरू, शुक्र	
चन्द्रमा		गुरू, शुक्र	मंग.		शनि, केतु	सूर्य, राहु	बुध
मंगल (बद)			बुध	सूर्य, राहु	गुरू, शुक्र		शनि, केतु
बुध			शनि, केतु			सूर्य, राहु	चन्द्र, गुरू, शुक्र
गुरू				चन्द्र			बुध
शुक्र				चन्द्र			बुध
शनि			गुरू, शुक्र			चन्द्र	मंग.
राहु	शनि(100), केतु(100)	मंग.			चन्द्र	गुरू, शुक्र	
केतु			गुरू, शुक्र			चन्द्र	मंग.

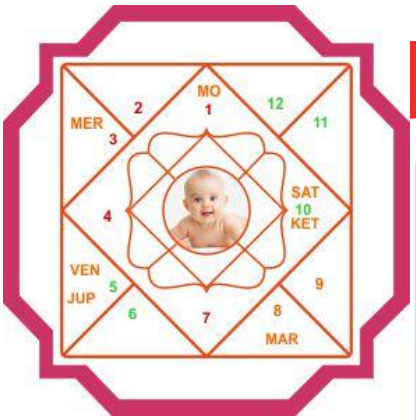

नाबालिक कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हुआ है या उनमें केवल बुध बैठा हुआ है अथवा केवल पापी ग्रह शनि, राहु, केतु स्थित हैं, तो ऐसी कुण्डली, नाबालिक टेवा (कुण्डली) कहलाती है। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव अग्रलिखित रूप में पड़ेगा। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1– उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
2– उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
3– उम्र के तीसरे साल में नौवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
4– उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
5– उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
6– उम्र के छठें साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
7– उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
8– उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
9– उम्र के नौवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
10– उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
11– उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
12– उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष – यह कुण्डली (टेवा) नाबालिक टेवा नहीं है।

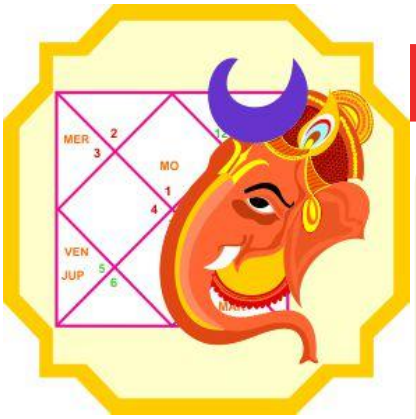

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में राहु या केतु 4थे भाव में या चन्द्रमा के साथ अथवा शनि 11वें भाव में या बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथलपुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष – यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) है।

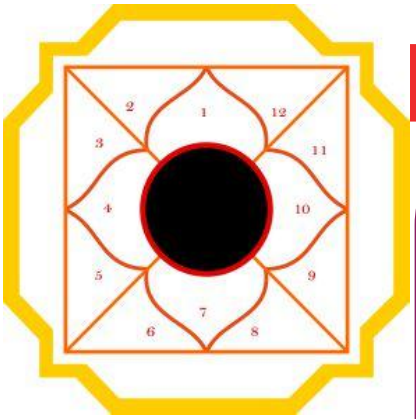

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें या कोई नीच ग्रह बैठा हो अथवा कोई ग्रह शत्रु ग्रह की पूर्ण दृष्टि में हो, तो ऐसी कुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें (युति या दृष्टि से) या नीच का ग्रह हो तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली के दसवें भाव में दो या दो से अधिक ग्रह स्थित हैं, जो आपस में शत्रु हैं (युति या दृष्टि से) या कोई नीच का ग्रह है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) है।

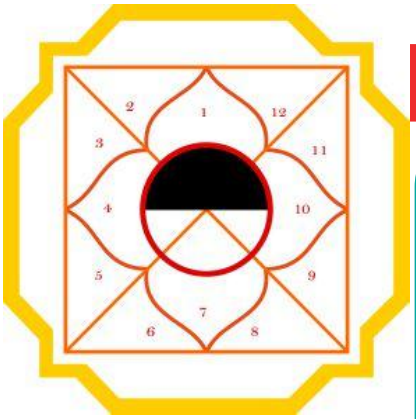

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिक जीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

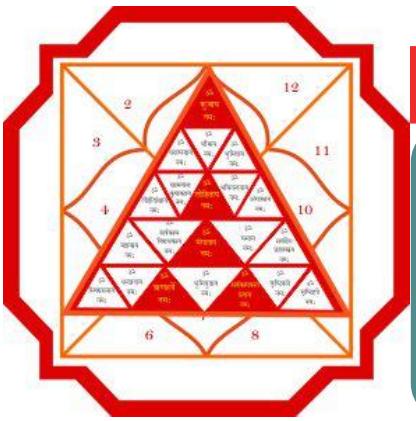

मांगलिक दोष और

लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति के अनुसार आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष लागू हो रहा है।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत ज्यादा आदर्शवादी और आलसी हो सकते हैं। आपकी आदर्शवादिता आपके दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण होगी।

1. हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. हनुमान जी को प्रसाद चढ़ायें।
3. हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ायें।
4. गायत्री का पाठ करें।
5. दुर्गा का पाठ करें।
6. रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।
7. लाल रूमाल पास में रखें।
8. चाँदी का छल्ला (बिना जोड़ का) पहनें।
9. तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
10. चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।
11. चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।
12. बन्दर पालें, या बन्दरों को भोजन दें।
13. तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को दें।
14. मंदिर में मीठा भोजन बांटें।
15. चीनी बहते पानी में प्रवाहित करें।
16. शहद या सिन्दूर बहते पानी में प्रवाहित करें।
17. मिट्टी की दीवार बनवाकर बारबार गिरायें।
18. घर में नौकर रखें।

चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।

चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।

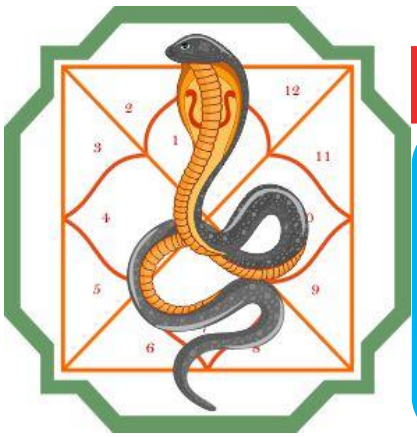

कालसर्प योग/दोष

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव

(1) किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना। (2) मानसिक तनाव। (3) आत्मविश्वास में कमी। (4) स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां। (5) गरीबी और धन की कमी। (6) व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी। (7) उत्तेजना और बेकार की चिंताएं। (8) मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव। (9) मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात। (10) मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

पितृ ऋण

कुण्डली में शुक्र दूसरे, पाँचवें, नवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

ऋण – कारण और लक्षण

1– यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।

2– यदि घर के आस–पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।

3– घर के आस–पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

प्रभाव

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन–संपत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जाती है तथा सिर पर चोटी के स्थान र बाल गायब हो जाते हैं और गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो जाती है। आपको बिना गलती के ही जेल जाना पड़ सकता है।

उपाय

1– आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर–बराबर पैसा इकट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

2– अपने घर के आस–पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहां की साफ–सफाई करें।

3– घर के आस–पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो तो उसकी सेवा तथा देख–भाल करें और उसमें पानी डालें।

स्वयं का ऋण

कुण्डली में शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में स्व ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

ऋण – कारण और लक्षण

1– आप धर्म, संस्कृति, भगवान या रीति–रिवजों को नहीं मानते हों, इसलिए आपकी कुण्डली में यह ऋण लागू हो रहा है।

2– आपके घर में तंदूर या भट्ठी हो सकती है।

3– आपके छत में किसी सूराख से रोशनी आ रही होगी।

4– हृदय रोग के लक्षण होंगे।

प्रभाव

आप अपने जीवन में उन्नति करेंगे और धन इकट्ठा करेंगे। आप समाज में बहुत सम्मानित भी हो सकते हैं, परन्तु जब आपका पुत्र ग्यारह महीने या ग्यारह साल का होता है, तो आपके सम्मान और धन पर ग्रहण लग सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है। यहां तक कि आप अपना शरीर भी नहीं हिला सकते हैं।

उपाय

आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बारबर मात्रा में धन इक्टठा करें और उस धन से सूर्य यज्ञ करवायें।

चौथे भाव में स्थित सूर्य का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आप धन संग्रह करते रहेंगे और अन्य लोग इससे लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी संतान करोड़पति होगी। आप किसी नई चीज का अविष्कार करेंगे और इस नयी खोज से आपको लाभ प्राप्त होगा। आपको नये कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अपने पैतृक व्यवसाय के अलाव कोई अन्य कार्य करेंगे तो आपको उसमें अधिक लाभ प्राप्त होगा। आप अपने देश को छोड़ कर विदेश में निवास कर सकते हैं। अपने पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। यदि आप अपने घर पर नल लगवाते हैं या कुँआ बनवाते हैं तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी। आपको अपनी 25 से 50 साल की आयु में बहुत लाभ प्राप्त होगा। पानी, कपड़े और दूध का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा और आप इससे बहुत लाभ कमायेंगे। विशेषकर कपड़े का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा। आप फल देने वाले वृक्ष लगायेंगे। आपका भाग्य आप पर मेहरबान होगा। यदि आप रात में काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपको घर संबंधित कोई समस्या नहीं आयेगी। आप समुद्री यात्राओं से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी विभाग से लाभ प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आपके लिये भाग्यशाली साबित होगी। आपको उनसे लाभ प्राप्त होगा। उन्हें अपने काम में उन्नति प्राप्त होगी। यदि आप वाहन से संबंधित कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आपमें चोरी करने की आदत हुई, आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े, किसी स्त्री के साथ गलत व्यवहार किया या पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखे तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि आपका सूर्य किसी कारण से कमजोर हो जाता है तो इसका बुरा असर आपके बच्चों पर पड़ सकता है। आपकी माता और बहन को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप बिना किसी कारण के दुःखी रह सकते हैं। आपकी माता चिन्तित रह सकती हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है। आपको जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े तो आपको अपने कार्य में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है और आपको रक्तचाप की समस्या हो सकती है। आपके माता–पिता के सुख में कमी आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– आपको चोरी से दूर रहना चाहिये।
2– महिलाओं के झगडे से दूर रहें।

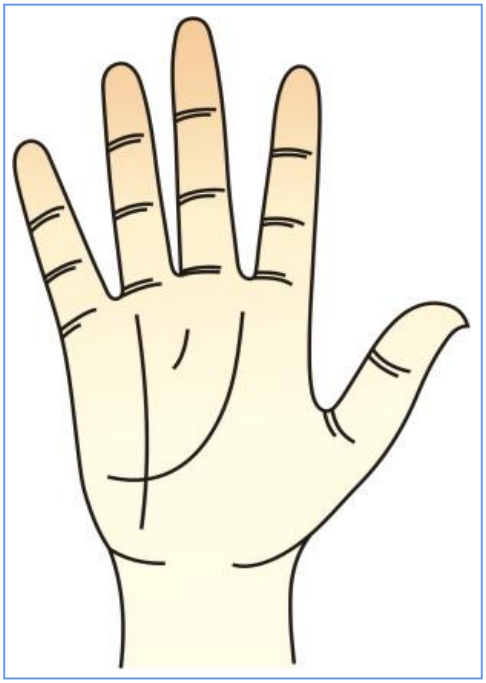

उपाय

1– अन्धों को भोजन दें।
2– शुद्ध सोना पहनें।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा पहले भाव में स्थित है। आपका जन्म काफी मिन्नतों के बाद हुआ होगा या आपका जन्म एक से अधिक बहनों के जन्म के बाद हुआ होगा। आपमें सबको आकर्षित करने की क्षमता होगी। आपको सफेद कपड़े पहनना पसन्द होगा। आपका स्वभाव शांत और विनम्र होगा। आप सुंदर होंगे। आप विद्वान होंगे और आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा। आपको पैतृक घर प्राप्त होगा। आप सम्पन्न होंगे और आपको जीवन में धन की कभी कमी नहीं होगी। यदि आपका विवाह 28 साल की आयु में होता है तो आप सारा जीवन सुखी रहेंगे। आपको किसी व्यक्ति की सम्पत्ति या धन प्राप्त होगा और इससे आप धनी हो जायेंगे। जब तक आपकी माता जीवित हैं, आपको धन की कमी नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आपके पिता को व्यापार, आर्थिक लाभ और जीवन से संबंधित शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आप 24 से 27 साल की आयु के बीच कोई यात्रा करते हैं तो यात्रा से वापस आने के बाद अपनी माता का आशीर्वाद लें। इससे आपकी माता दीर्घायु होंगी। आपको 24 साल की आयु से पहले अपना घर नहीं बनवाना चाहिये। आपकी वृद्धावस्था सुख से पूर्ण होगी।

यदि आप 24 साल से पहले अपना घर बनवाते हैं, 28 साल की आयु में विवाह करते हैं, अपनी आया से झगड़ा करते हैं या गाय को कष्ट देते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप पानी में डूब सकते हैं। आपको मानसिक शांति नहीं मिल सकती है और आप चिन्तित रह सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता है। आपको दिल और ऑख से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– अपनी माता या बूढ़ी औरतों से झगड़ा न करें।
2– आपको नैतिक मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिये।

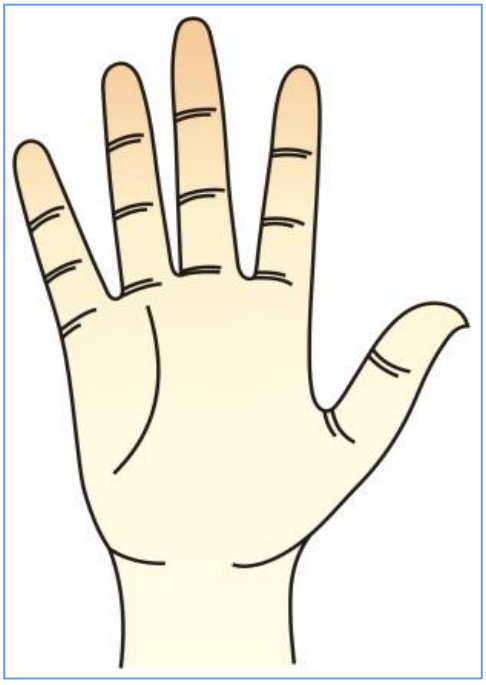

उपाय

1– चांदी के गिलास में पानी या दूध पियें।
2– पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें।

आठवें भाव में स्थित मंगल का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार आप मांगलिक हैं। आपको अपने माता–पिता का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आप निडर और उत्साही होंगे। परिणामों की परवाह किये बिना आप चुनौतियों का मुकाबला करेंगे। आप न्याय पाने के लिये लड़ाई करने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप अपने काम में गहरी रूचि लेंगे और उसे पूरे मन से करेंगे। भगवान आपका जीवन बुरी घटनाओं से बचायेगा। आप बाधाओं का मुकाबला चिन्तित हुये बिना करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों से सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे।

यदि आप विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करेंगे, हर समय अपने पास चाकू रखेंगे, लोगों के साथ झगड़ा करेंगे, आपके घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी हुई तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके छोटे भाई को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उसके कारण झगड़ा हो सकता है। आपका भाई आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। किसी अचानक दुर्घटना के कारण आपको कोई रक्त संबंधी विकार हो सकता है या कोई नाखून संबंधी रोग हो सकता है। किसी व्यक्ति पर बिना किसी कारण क्रोध करना आपके लिये पश्चाताप का कारण बन सकता है। आपको हानि भी हो सकती है। कोई आप पर आक्रमण कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– अपने घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी न रखें।
2– तोता न पालें।

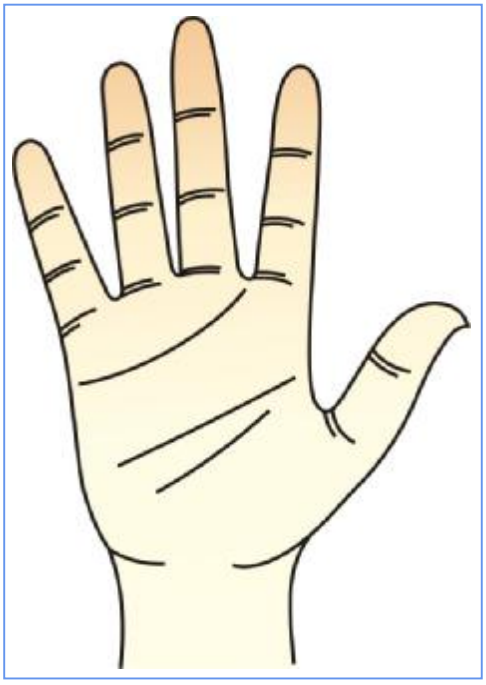

उपाय

1– विधवा का आशीर्वाद लें।
2– तन्दूर में मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को खिलायें।

तीसरे भाव में स्थित बुध का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आप सदैव यात्रा करेंगे। आपको चिकित्सा व्यवसाय में यश प्राप्त होगा। आपके मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे। आपको कुछ खराब परिणामों के साथ उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आप दूसरों के लिये भाग्यशाली साबित होंगे। जो भी आपसे मिलेगा, उसे लाभ प्राप्त होगा। आपको आय के उत्तम साधन प्राप्त होते रहेंगे। यदि आप फल, खेती, कांसे के बर्तन, पशुपालन से सम्बन्धित व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप अपने मामा और संतानों के लिये लाभकारी होंगे। आपको दमा का उपचार करना आता होगा। आप अपने व्यापार में प्रगति करेंगे। आप निडर होंगे, लेकिन झगड़ों से दूर रहेंगे। आपको बुरे कार्यों से घृणा होगी। किसी नये कार्य को आरम्भ करते समय आपके दिमाग में कई विचार आयेंगे और आप जिन पर विश्वास करेंगे, उनसे परामर्श करेंगे। आप अपने दिमाग से भी सोचेंगे।

यदि आप अपनी बुआ, बहन, पुत्री के धन का प्रयोग करेंगे, चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष लगायेंगे, दक्षिणमुखी घर में रहेंगे तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका जीवन बहुत अच्छा नहीं हो सकता है। आपको भाइ–बहनों का सुख नहीं मिल सकता है। आपका उनसे झगड़ा हो सकता है। आपका भाग्य देर से उदय हो सकता है। आपको संतान सुख देर से प्राप्त हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– मामा और बुआ से न लड़ें।
2– चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष न लगायें।

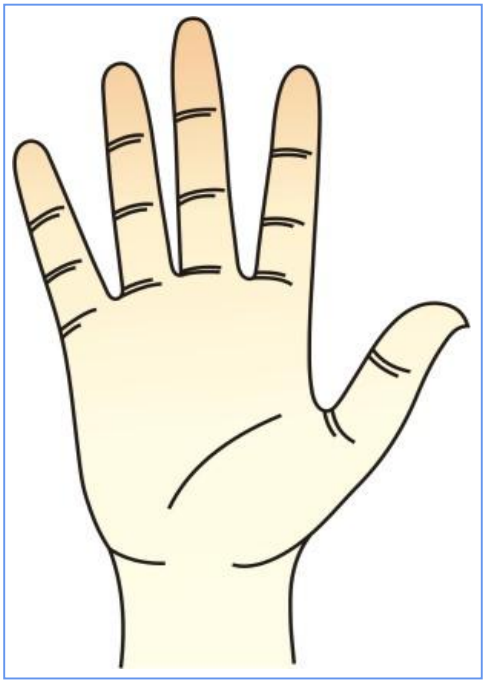

उपाय

1– कन्याओं की सेवा करें या दुर्गा पूजा करें।
2– तोता पालें।

पाँचवें भाव में स्थित गुरू का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पॉचवें भाव में स्थित है। आपकी संतान प्रगति करेगी। अपनी आयु बढ़ने के साथ–साथ आप भी प्रगति करेंगे। आपकी 16वें साल की आयु के दौरान आपका भाग्य चमकेगा। आप संतान की तरफ से सुखी रहेंगे। आपको 60 साल की आयु तक उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको अपनी संतान के जन्म के बाद अपने दादा या पिता से मदद प्राप्त नहीं हो सकती है। आपकी संतान, जिसका जन्म बृहस्पतिवार को होगा, के जन्म के बाद आपका भाग्य चमकेगा। आपको आध्यात्म का परम ज्ञान होगा और आप यश प्राप्त करेंगे। आप व्यापार या लेखन के द्वारा धन कमायेंगे। आप दूसरों की मदद करेंगे। आप धन संग्रह करेंगे और खुश रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में लोग आपको एक प्रधान की तरह मानेंगे।

यदि आप धर्म के विरूद्ध सोचेंगे, धर्म के नाम पर एकत्र किये गये दान का प्रयोग करेंगे, साधुओं से झगड़ा करेंगे तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप और अधिक क्रोध कर सकते हैं। यदि आप पराई महिलाओं के साथ संबंध रखेंगे तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अधिकारियों के साथ बैर भाव रखेंगे या बिना मोल दिये कोई सामान लेंगे तो आपको हानि हो सकती है। यदि आप मांसाहारी भोजन करेंगे या आलस्य करेंगे तो आपको हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– ईश्वर में आस्था रखें।
2– नाव से किसी तरह का कोई संबंध न रखें।

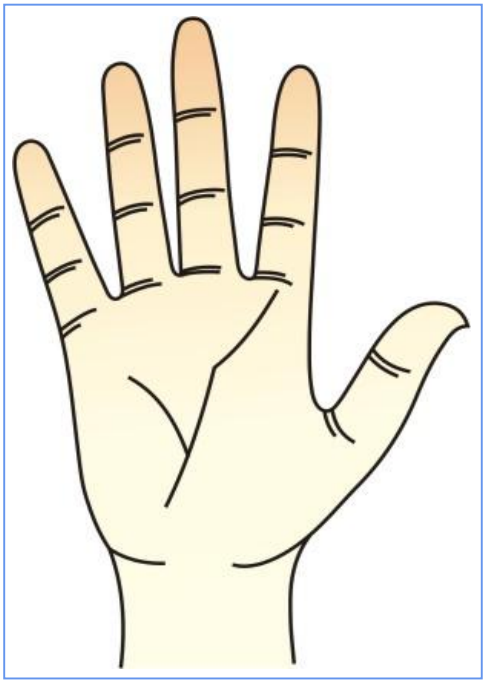

उपाय

1–साधुओं की सेवा करें।
2–धर्मशाला या धार्मिक स्थान को साफ करें।

पाँचवें भाव में स्थित शुक्र का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में शुक्र पॉचवें भाव में स्थित है। आप विद्वान होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आपकी पत्नी वफादार होंगी। आपको सफेद रंग की वस्तुओं से लाभ प्राप्त होगा। आप अपने समुदाय से प्रेम करेंगे। आपके विवाह के 5 साल बाद आपको धन और नौकरों का बहुत सुख प्राप्त होगा। आपको अपने व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। जब तक आपकी पत्नी जीवित हैं, आपको किसी प्रकार का अभाव नहीं होगा। आपका धन बढ़ेगा। आप अपने परिवार और देश से प्रेम करेंगे। आप अपने भाई के लिये अनुकूल होंगे। आप जीवन में बाधाओं का सामना नहीं करेंगे। आपका जीवन आनन्द और शांति से पूर्ण होगा।

यदि आपने अपना चरित्र खराब किया, अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह किया तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप कामुक हो सकते हैं और इस कारण से आपके सुख में बाधा पहुँच सकती है। यदि आपकी संगति बुरी हुई या आप प्रेम प्रसंग में पड़े तो भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपके कारण आपके मित्रों को परेशानी हो सकती है। आप दोहरी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपकी पत्नी का गर्भपात हो सकता है या आपको संतान प्राप्ति में देरी हो सकती है। यदि आप प्रेम विवाह करते हैं तो आपको पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपकी बहन या बुआ के धन का नाश हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– महिलाओं के लिये दीवाने न हों।
2– अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें।
3– प्रेम या अन्तर्जातीय विवाह न करें।

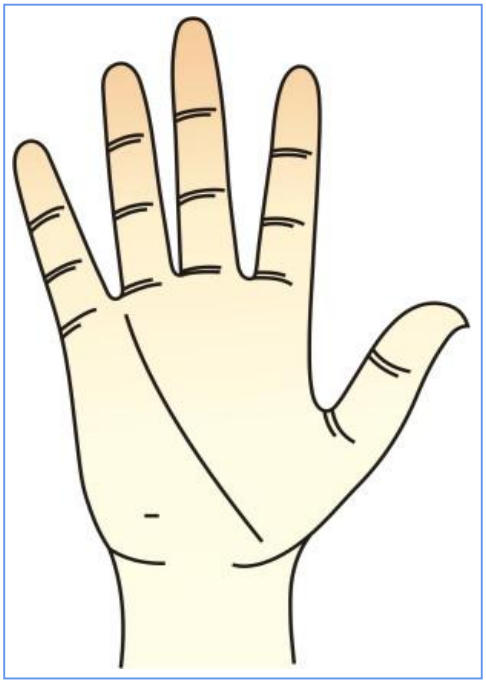

उपाय

1– अपने शरीर पर दही या दूध मलकर स्नान करें।
2– गाय की सेवा करें।

दसवें भाव में स्थित शनि का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप महत्वाकांक्षी होंगे। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। यदि आप दूसरों का आदर करेंगे तो आपको भी सम्मान मिलेगा। प्रत्येक 7 साल की अवधि के बाद आपका धन बढ़ेगा। आपकी आयु के प्रत्येक 3 साल आपके लिये लाभकरी होंगे। आप धार्मिक और सद्‌गुणी व्यक्ति होंगे, लेकिन अपनी वृद्धावस्था के दौरान आप निकम्मे हो सकते हैं। आपके ससुराल वालों का धन भी बढ़ेगा। आपको उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। यदि आप अपना व्यवसाय एक स्थान पर करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप मेहनती होंगे और अपना भाग्य स्वयं लिखेंगे। आप 39 साल की आयु तक पिता का उत्तम सुख प्राप्त करेंगे। 3रा, 4था, 9वॉ, 21वॉ, 33वॉ, 40वॉ और 57वॉ साल आपके जीवन का बहुत लाभकरी होगा। आपका धन, प्रगति और सम्मान इन सालों में 10 गुना बढ़ेगा।

यदि आप 48 साल की आयु के पहले घर बनाते हैं, मांस–मदिरा का सेवन करेंगे, अपना चरित्र खराब करेंगे, यात्रा वाला व्यवसाय करेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके माता–पिता, जीवनसाथी और ससुराल वालों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको हानि हो सकती है या आपकी प्रगति रूक सकती है। आपका धन और सम्मान लुप्त हो सकता है। आपके जीवन का 27वॉ साल अशुभ हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– मांस–मदिरा का सेवन न करें।
2– भाग–दौड़ के काम न करें।

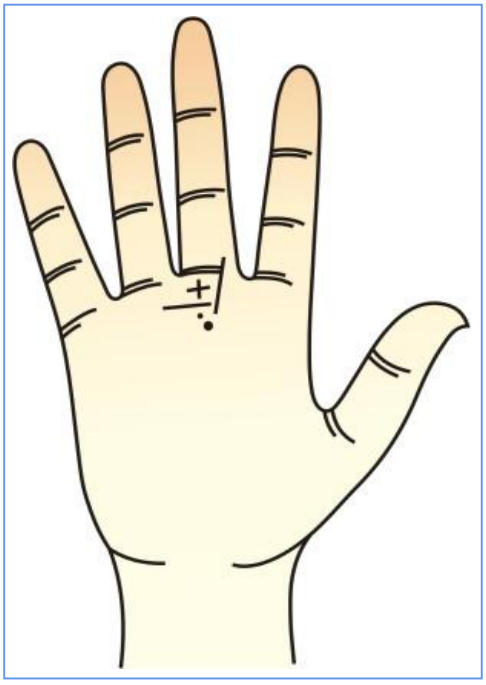

उपाय

1– अपने पास हथियार न रखें।
2– अपने मस्तक पर केसर का तिलक लगायें।

चौथे भाव में स्थित राहु का विश्लेषण

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आप सद्गुणी, धनी और दीर्घायु होंगे। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप सज्जन होंगे और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप बड़ी सम्पत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने संबंधियों से धन और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप दूसरों की मदद करेंगे और लोग आपको परोपकारी व्यक्ति मानेंगे। आप दयालु होंगे और आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप अपनी बहन और पुत्री के लिये धन खर्च करेंगे। आपको अपने ससुराल से धन और लाभ प्राप्त होते रहेंगे। आपके ससुराल वालों का धन बढ़ेगा। आप 24 साल की आयु के बाद धन संग्रह करेंगे। आपके पिता और संतान को उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे, परन्तु आपकी माता के साथ ऐसा नहीं हो सकता है। आपको भूमि, भवन, वाहन और जीवन के अन्य सुख प्राप्त होंगे। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप अपने विभाग में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आपको बन्दूक या पिस्तौल रखने का शौक होगा।

यदि आपने पूजा का स्थान बदला, लकड़ी का कोयला अपने घर की छत पर रखा, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनायी, अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ संबंध रखा तो आपका राहु कमजोर हो सकता है। यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको 34 साल की आयु के दौरान परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता को भी परेशानी हो सकती है। आपके ससुराल और ननिहाल वालों को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप अपनी रखैल पर धन बर्बाद करने के बाद अपना जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप शेखचिल्ली की तरह दिन में सपने देख सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ अनैतिक संबंध न रखें।
2– गंगा स्नान करें।

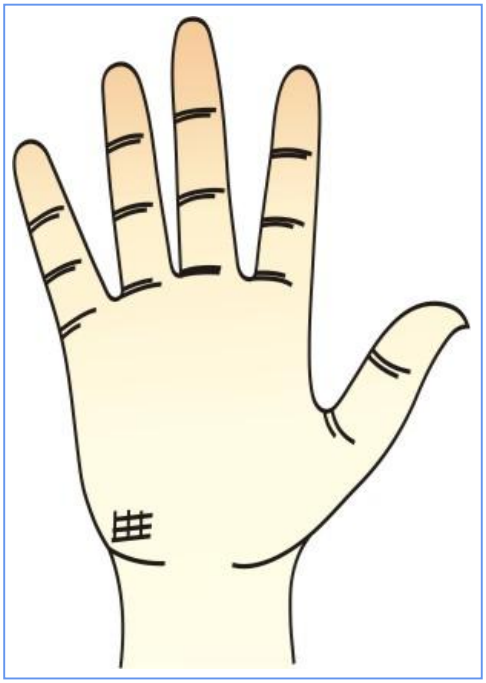

उपाय

1–घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2–पानी में सूखा धनिया प्रवाहित करें।

दसवें भाव में स्थित केतु का विश्लेषण

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें घर में स्थित है। आप धनवान होंगे और हर तरह की सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण होंगे। आपका जीवन खुशहाल होगा और आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र संतान की तुलना में कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होगा। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप शंकालु स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके जीवन में 40 वर्ष की आयु तक समय मिला–जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिलाकर आपका जीवन सुखमय रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पराई स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है। यदि किसी कारण वश केतु मंदा हो गया तो आपका चाल–चलन ठीक नहीं हो सकता है। आप या तो नपुंसक हो सकते हैं या आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती या आपको पुरुष संतान नहीं हो सकती है या संतान गोद लेने की नौबत आ सकती है। इसकी वजह से आपको बहुत परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। आपके भाई आपको बर्बाद कर सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग कर सकते हैं। पराई औरत के साथ संबंध आपके दाम्पत्य सुख में बाधा पहुंचा सकता है। यह आपके जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। आपको 48 वर्ष की आयु के आस–पास या माता की मौत के बाद पुत्र सुख मिल सकता हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज

1– चाल–चलन ठीक रखें।
2– कुत्तों से नफरत न करें।

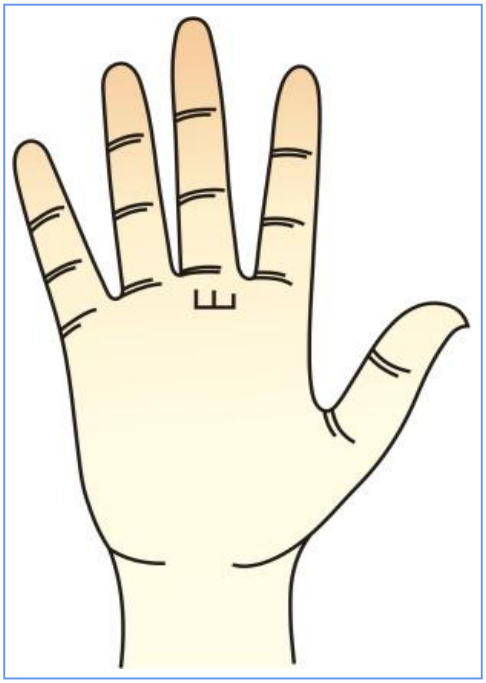

उपाय

1– मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2– घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

लाल किताब वर्षफल (49)

(18:12:2021 To 17:12:2022)

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

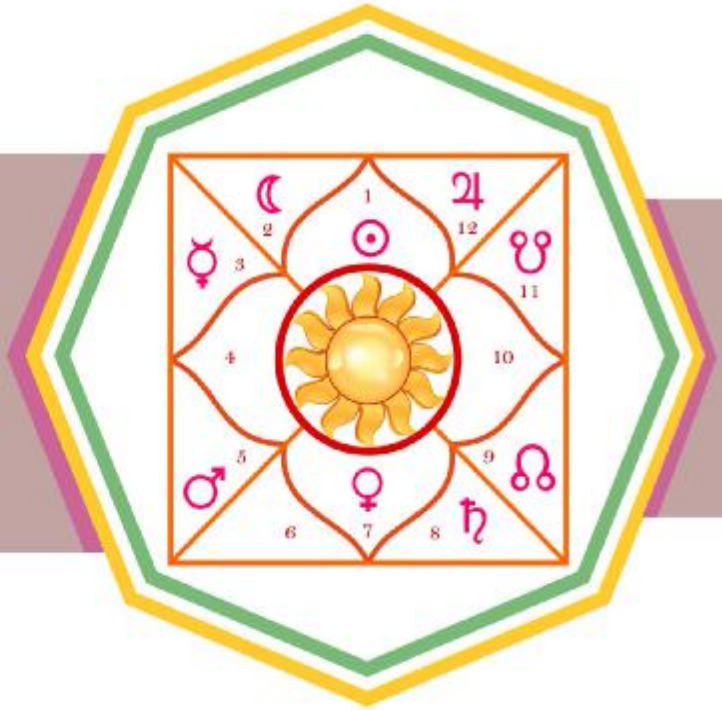

PAWAN KUMAR VERMA

ASTRO RESEARCH CENTER

Contact - 9417311379

© RED ASTRO 11 Professional

लाल किताब में ग्रह

Varshphala - 49 (18:12:2021 To 17:12:2022)

सूर्य	भाव न. 6, राशिफल, अशुभ भाव में
चन्द्रमा	भाव न. 1, कायम, शुभ भाव में, साथी (मंगल)
मंगल	भाव न. 4, राशिफल, नीचस्थ, मित्र के घर में, अशुभ भाव में, साथी (चन्द्रमा)
बुध	भाव न. 10, स्वभाव (राहु), राशिफल, शुभ भाव में
गुरू	भाव न. 12, अपने घर का, शुभ भाव में, साथी (चन्द्रमा)
शुक्र	भाव न. 12, उच्चस्थ, शुभ भाव में, साथी (राहु)
शनि	भाव न. 9, बद स्वभाव, राशिफल, कायम, शुभ भाव में, साथी (बुध)
राहु	भाव न. 6, उच्चस्थ, भाग्योदय का, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (शुक्र,केतु)
केतु	भाव न. 9, उच्चस्थ, कायम, शुभ भाव में, साथी (राहु)

लाल किताब वर्षफल

Varshphala - 49 (18:12:2021 To 17:12:2022)

लाल किताब टेवा

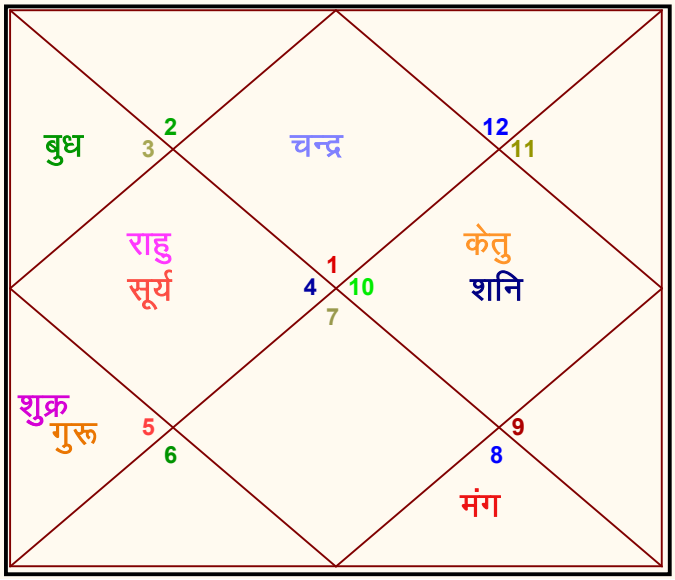

वर्षफल कुण्डली (49)

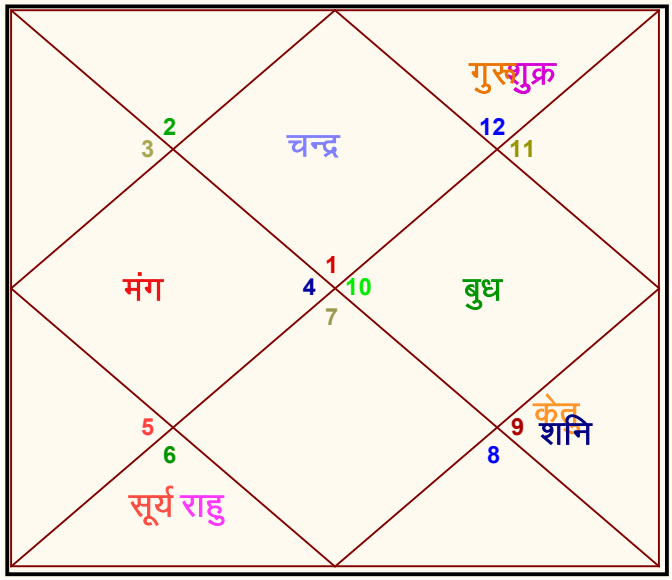

ग्रह योग

सूर्य + गुरू	(दृष्टि–25), चन्द्रमा, वाल्दैनी खुन (वीर्य)
सूर्य + शुक्र	(दृष्टि–25), गुरू, संतान की पैदाईश
मंगल + बुध	(दृष्टि–100), शनि (राहु), सेहत / बीमारी
गुरू + शुक्र	(युति), शनि (केतु), सेहत / बीमारी
गुरू + राहु	(दृष्टि–25), बुध, इज्जत / शोहरत

ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य	गुरू(25), शुक्र(25)	बुध	चन्द्र				मंग.
चन्द्रमा				शनि, केतु	बुध	मंग.	
मंगल (बद)	बुध(100)			गुरू, शुक्र	चन्द्र		सूर्य, राहु
बुध				सूर्य, राहु		चन्द्र	गुरू, शुक्र
गुरू		मंग.			शनि, केतु	चन्द्र	बुध
शुक्र		मंग.			शनि, केतु	चन्द्र	बुध
शनि		चन्द्र	मंग.		सूर्य, राहु	बुध	
राहु	गुरू(25), शुक्र(25)	बुध	चन्द्र				मंग.
केतु		चन्द्र	मंग.		सूर्य, राहु	बुध	

छठे भाव में स्थित सूर्य का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपका स्वास्थ्य इस वर्ष आपके लिए चिन्ता का विषय होगा। आपको रक्तचाप से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। धार्मिक कार्यों में विघ्न पड़ सकता है। यात्राओं से प्रायः हानि की संभावना होगी। आपके पिता का स्वास्थ्य भी इस वर्ष आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपके अधिकारी आपको अकारण परेशान कर सकते हैं।

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) भूरे रंग की चीटियों को सतनाजा डालें।
(2) अपने घर में चांदी के बर्तन में गंगाजल रखें।
(3) अपनी माता की सेवा करें।
(4) किसी धार्मिक स्थान में दान की हुई वस्तुओं को अपने घर में ले आकर रखें।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको कपड़े और कागज से सम्बन्धित व्यवसाय से अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपके शत्रुओं की स्थिति कमजोर होगी। स्त्रियों से आपको विशेष रूप से लाभ प्राप्त होगा। आपमें भावुकता और संवेदनशीलता जरूरत से ज्यादा बढ़ सकती है। आप दूसरों की मदद करेंगे।

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) दूध और दूध से बनी वस्तुओं का व्यापार ना करें।
(2) अपनी माता की सेवा करें।
(3) चांदी के बर्तन का उपयोग करें।
(4) नदी पार करते समय उसमें पैसा बहाएं।

चौथे भाव में स्थित मंगल का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में मंगल अशुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने क्रोध पर काबू रखने की आवश्यकता है। भाई–बन्धुओं से आपका मनमुटाव हो सकता है। आपको जीभ से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। आपको इस वर्ष वाहन चलाते समय काफी सावधान और सचेत रहने की भी आवश्यकता है। इस वर्ष आपके परिवार के किसी स्त्री सदस्य का कोई बड़ा ऑपरेशन हो सकता है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) आपको चीनी या शहद से सम्बन्धित कारोबार से बचना चाहिए।
(2) अपने पास चांदी का एक चौकोर टुकड़ा रखें।
(3) चीनी के खाली बोरे अपनी छत पर रखें।
(4) दक्षिणमुखी मकान में ना रहें।
(5) सुबह उठते ही अपना दांत साफ पानी से धोयें।
(6) अपनी माता की सेवा करें।

दसवें भाव में स्थित बुध का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको किसी विदेशी स्रोत से लाभ प्राप्त होगा। आपके नौकरी/व्यापार में अड़चनें आयेंगी, परन्तु आप अपनी मेहनत से उन अड़चनों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपकी बहन, बुआ अथवा बेटी की तरफ से भी इस वर्ष आपको शुभ समाचार प्राप्त होंगे। इस वर्ष आपको आध्यात्म और ज्योतिष संबंधी विषयों में भी रूचि होगी।

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) अपने घर में तुलसी, मनीप्लांट इत्यादि चौड़े पत्तों वाले पौधे नहीं लगायें।
(2) मांस–मदिरा इत्यादि के सेवन से बचें।
(3) सूखा नारियल मंदिर में चढ़ायें।
(4) बचा हुआ भोजन मछलियों को खिलायें।
(5) मजदूरों की सेवा एवं सहायता करें।

बरहवें भाव में स्थित गुरू का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में गुरू शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप धार्मिक क्रिया–कलापों में अपना धन खर्च करेंगे तथा वर्ष–पर्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति बनी रहेगी। धन के संबंध में इस वर्ष आप अधिक सोच–विचार नहीं करेंगे। आपका दिया हुआ आशीर्वाद फलीभूत होगा। धर्म, योग इत्यादि विषयों में वर्ष पर्यन्त आपका मन रमा रहेगा।

गुरू के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) पीपल के वृक्ष की सेवा करें।
(2) केसर का तिलक लगायें।
(3) दूसरों को धोखा ना दें।
(4) गले में माला इत्यादि ना पहनें।
(5) अपनी नाक साफ रखें।
(6) साधु–संतों और बुजुर्गों की सेवा करें।

बरहवें भाव में स्थित शुक्र का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको व्यावसायिक अथवा सरकारी कार्यों में काफी सफलता मिलेगी। शारीरिक और मानसिक सुख में वृद्धि होगी। जीवनसाथी और संतान के सेवा भाव से मन प्रसन्न रहेगा। इस वर्ष आपको चित्रकारी और संगीत में विशेष रूचि रहेगी। किसी स्त्री के सहयोग से आपको विदेश जाने का सुअवसर भी प्राप्त हो सकता है। आप अपने परिवार की देखभाल करेंगे तथा घर में आमोद–प्रमोद की वस्तुओं की बढ़ोत्तरी होगी।

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) नीले रंग का फूल अपनी पत्नी के हाथों जमीन में दबवायें।
(2) अपना चाल–चलन ठीक रखें।
(3) अपनी पत्नी की देखभाल करें।
(4) घी के दिये जलायें।
(5) बछड़े सहित गाय का दान करें।

नौवें भाव में स्थित शनि का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में शनि शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको सोने–चांदी से संबंधित व्यवसाय में लाभ होगा। इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना बहुत अधिक रहेगी और धर्म–कर्म के कार्य में आप बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आप पर कोई ऋण नहीं होगा और आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी। आपके चल–अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और जीवनसाथी के नाम पर शुरू किया हुआ व्यवसाय लाभदायक होगा। आपको अपने पास संख्या में तीन मकान नहीं रखना चाहिए।

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) अपने घर की छत पर ईंधन ना रखें।
(2) नौ दिन लगातार गंगा में स्नान करें।
(3) दूसरों की अचल सम्पत्ति पर बुरी नजर ना डालें।
(4) माथे पर केसर का तिलक लगायें।

छठे भाव में स्थित राहु का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में छठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके दुश्मन आपसे भयभीत रहेंगे। न्यायालय, मुकदमों में आपकी विजय होगी। आपके धन और सम्मान में वृद्धि होगी। अगर आप राजनैतिक क्षेत्र में हैं, तो किसी बड़े पद की प्राप्ति हो सकती है।

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) काला कुत्ता पालें।
(2) अपने भाई–बन्धु से लड़ाई–झगड़ा ना करें।
(3) शीशे की 6 गोलियां अपने पास रखें।
(4) काले शीशे का गोल टुकड़ा अपने पास रखें।

नौवें भाव में स्थित केतु का विश्लेषण

वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से शुभ फलदायक है। समाज में आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विदेश प्रवास का भी योग है। किसी भी कार्य में अपनी संतान का सुझाव अवश्य लें। यदि आप दूसरों को आशीर्वाद देते हैं, तो फलीभूत होगा।

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

उपाय

(1) कानों में सोना पहनें।
(2) सोने की ईंट (21 ग्राम) अपने घर में रखें।
(3) गलत लोगों की संगत में ना रहें।
(4) कुत्तों को ना सतायें।

वर्षफल में महत्वपूर्ण योग

आपके वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में और बुध सातवें, आठवें, नवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको विदेश यात्रा से धन की प्राप्ति होगी।

आपके वर्षफल कुण्डली में शुक्र बारहवें भाव में और राहु दूसरे, छठे या सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके ससुराल पक्ष के लोग आपके गृहस्थ जीवन को अशांत कर सकते हैं। उपाय के तौर पर सफेद गाय की सेवा करें ।

आपके वर्षफल कुण्डली में शनि नवें भाव में और मंगल चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी जायदाद नष्ट हो सकती है।